विनम्रता

"रहमान के (वास्तविक) बन्दे तो वे हैं जो ज़मीन पर नर्म चाल चलते हैं, और जाहिल उनके मुँह आएँ तो कह देते हैं कि तुमको सलाम।
(क़ुरआन 25:63)

अल्लाह के नबी (स) अपने सम्मान में लोगों को खड़ा होने से रोका करते थे। किसी सभा मे जहाँ जगह मिलती आप वहीं पर बैठ जाया करते और कभी-किसी ऊँचे या श्रेष्ठ स्थान को पाने की कोशिश न करते। आप कभी ऐसा लिबास न पहनते थे जो आपको साथियों से अलग कर दे जो उनसे बहुत ऊँचे दर्जे का दिखाई दे। आप हमेशा ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों के साथ घुल - मिल रहते बूढ़ों के साथ उठते-बैठते और विधवाओं की सहायता करते। जो लोग आपको जानते नहीं थे, वे आपको भीड़ मे से पहचान नहीं पाते थे।

अपने साथियों को सम्बोधित करते हुए आप (स) ने कहा अल्लाह ने मुझे संदेश भेजा है कि तुम्हें हमेशा विनम्र होना चाहिए। कोई भी अपने आप को किसी से श्रेष्ठ न समझे और न ही कोई किसी को सताए। आप (स)को डर लगा रहता था कि लोग कहीं आपकी पूजा न करने लगें जोकि सिर्फ़ अल्लाह का हक़ है। आप (स) फ़रमाते कि- "मेरी तारीफ़ करने में हदों को पार मत करो, जिस तरह ईसाइयों ने मरयम के बेटे ईसा मसीह के साथ किया। मैं बस ख़ुदा का एक बन्दा हूँ तो तुम मुझे अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल ही पुकारो।"

आदर्श पति

"उनके साथ भले तरीक़े से ज़िन्दगी बसर करो।
(क़ुरआन 4 : 19)

नबी(स) की बीवी हज़रत आइशा (र) अपने महान और उच्च स्वभाववाले पति के बारे में कहती हैं कि आप (स) हमेशा घर के काम - काज में मदद करते, अपने कपड़ों में पेवन्द भी ख़ुद लगा लेते, अपने जूतों की मरम्मत ख़ुद कर लेते और झाड़ू भी लगा देते। आप (स) अपने जानवरों का दूध दूहते उनकी देखभाल करते और उन्हें चारा डालते और दूसरे घरेलु काम भी करते थे।"

केवल प्यारे नबी (स) ही एक सेवानिष्ट (Devoted) और वफ़ादार पति न थे बल्कि आप (स) अपने साथियों को भी अपना अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करते। आप फ़रमाते कि ' मुसलमानों में सबसे अच्छे ईमानवाले लोग वे जिनका आचरण सबसे अच्छा है। और उनमें भी सबसे अच्छे वे हैं जो अपनी बीवियों के लिए सबसे अच्छे हैं।

निस्संदेह तुम एक महान नैतिकता के शिखर पर हो
(क़ुरआन 68 : 4)

आदर्श व्यक्तित्व

जो कुछ हम ऊपर बता चुके हैं,वह मुहम्मद (स) के जीवन की एक झलक मात्र थी कि किस तरह आप (स) ने अपनी ज़िन्दगी गुज़ारी। जिन लोगों के सामने इस्लाम की मीडिया के द्वारा बनी हुई तस्वीर है, जिसे मीडिया निरन्तर ग़लत तरीक़े से पेश करता रहता है, हो सकता है उनके लिए नबी (स) की दयालुता और रहमदिली की ये मिसालें हैरत में डाल देने वाली हों।

यह बात बहुत महत्वपूर्ण है कि इस्लाम को समझने के लिए उसके असली स्रोत को ही देखे यानी कुरआन और नबी (स) की हदीसों (आपकी कथनी और करनी की ख़बर) को क्योंकि कुछ भटके हुए मुसलमानों के कामों को देखकर इस्लाम की सच्चाई को नहीं समझा जा सकता।

मुहम्मद (स) ग़ैर-मुस्लिम विद्वानों की नज़र में

भारत के महान राजनीतिक एवं आध्यात्मिक नेता, महात्मा गाँधी का मत है। पैग़म्बर मुहम्मद का अपने मिशन पर सादगी के साथ जमे रहना,ख़ुद को पूरी तरह से उसके लिए घुला देना,अपने वादे का ईमानदारी के साथ पालन करना, अपने साथियों और अनुयायियों के लिए क़ुरबानी की भावना, उनकी बेख़ौफ़ी उनकी बहादुरी, उनका अपने ख़ुदा और अपने मक़सद के साथ गहरा यक़ीन यही वे सब चीज़े थीं न कि कोई तलवार जिसने हर चीज़ को उनके आगे डाल दिया और हर बाधा को उन्होंने पार कर लिया।

अंग्रेज़ नाटककार जार्ज बरनार्ड शा कहता है कि दुनिया को मुहम्मद जैसे दिमाग़दार व्यक्ति की सख़त जरूरत है। मध्यकाल में धार्मिक लोगों ने अपने अज्ञान और पक्षपात के कारण मुहम्मद (स) की बहुत गन्दी तस्वीर बनाई है, क्योंकि वे समझते थे कि मुहम्मद ईसाइयत के दुश्मन है। लेकिन इस (महान) व्यक्ति की कहानी पढ़ लेने के बाद मैंने यह पाया कि यह कोई आश्चर्यजनक और चमत्कारी पुरुष था, और मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि वह कभी भी ईसाइयत का दुश्मन नहीं रहा। बल्कि उसे तो मानवता का रक्षक कहा जाना चाहिए। मेरी राय में अगर आज उसे दुनिया की कमान दी जाती तो वह हमारी सारी समस्याओं का हल कर देता और दुनिया में शान्ती स्थापित कर देता, जिस की दुनिया को आज सख़त ज़रूरत है।"

हमसे सम्पर्क करें
इस्लामिक इन्फ़ॉरमेशन सेंटर
www.discovertruepath.com
You Tube : DiscoverTruePath

मुहम्मद

(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

अपको उनके बारे में जान्ना चाहिए।

इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं के सम्बन्ध में जानकारी हासिल करने हेतु सम्पर्क करें

Toll Free 1800 572 3000
040 - 6832 7832
www.discovertruepath.com
You Tube : DiscoverTruePath

कौन हैं

मुहम्मद (स)

निस्संदेह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्श है अर्थात उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अन्तिम दिन की आशा रखता हो और अल्लाह को अधिक याद करे (कुरआन 33 : 21)

मुसलमानों का यह यक़ीन है कि मुहम्मद (स) लोगों को एक ख़ुदा (अरबी भाषा मे अल्लाह)की उपासना और बन्दगी की तरफ़ बुलाने के लिए भेजे गए नबियों की श्रृंखला के आख़िरी नबी हैं । जैसे आदम, नूह , इबराहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याक़ूब,यूसुफ़, मूसा, दाऊद, सुलैमान और ईसा मसीह (अलैहि) आदि सब इसी श्रृंखला के नबी हैं ।

मुसलमानों का ईमान है कि जिस तरह मूसा (अलैहि) को तौरात (मूल और विशुद्ध तौरात जो मुसा पर अवतरित हुई थी) देकर और ईसा मसीह (अलैहि) को इंजील (मूल और विशुद्ध इंजील,न कि आज की परिवर्तित इंजील) देकर भेजा गया, उसी तरह मुहम्मद (सल्ल) को क़ुरआन देकर भेजा ताकि आप (सल्ल) क़ुरआन की शिक्षाओं के अनुसार जीवन व्यतीत करके दिखाएँ ।

एक बार आप (स) की पत्नी हज़रत आइशा (रजि) से आप (स) के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि आप (स) तो चलता-फिरता क़ुरआन, थे । जिसका अर्थ यह है कि आप क़ुरआन की महान शिक्षाओं पर अपनी ज़िन्दगी में पूरी तरह से अमल करते थे । हम आपको बताते हैं कि किस तरह पैग़म्बर मुहम्मद (स) ने क़ुरआन की महान शिक्षाओं को अपने व्यवहार से पूरा करके दिखाया ।

" हमने तुम्हें सारे संसार के लिए बस सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है " (कुरआन 21:107)

आप (स)

की ज़िन्दगी का मिशन : दया और कृपा

नबी (स) ने लोगों को नमाज़, रोज़ा और ज़कात देने की तरफ़ बुलाने के साथ-साथ यह भी बताया कि अगर तुम लोग एक ख़ुदा पर ईमान रखते हो तो वह दुसरों के साथ तुम्हारे व्यवहार से प्रकट होना चाहिए । आप (स) ने फ़रमाया "तुम में सबसे बेहतर व्यक्ति वह है जिसका चरित्र सबसे अच्छा है"

पैग़म्बर मुहम्मद(स)कि बहुतसी शिक्षाओं में ईमान के साथ-साथ अमल करने पर भी ज़ोर दिया गया है । जैसे आप (स) ने कहा, जो कोई भी अल्लाह और आख़िरत के दिन पर यक़ीन रखता हो तो उसे चाहिए कि अपने पड़ोसी को कोई चोट न पहुँचाए और जो कोई अल्लाह और आख़िरत के दिन पर यक़ीन रखता हो तो उसे चाहिए कि अपने मेहमान के साथ बेहतरीन तरीक़े से पेश आए जो कोई अल्लाह और आख़िरत के दिन पर यक़ीन रखता हो तो उसे चाहिए कि बोले तो भली बात वरना ख़ामोश रहे । ''

अल्लाह के आख़िरी नबी मुहम्मद (स) ने लोगों को एक-दूसरों के साथ रहम करने और एक-दूसरे का सम्मान करने कि शिक्षा दी । आप (स) ने कहा कि , जो दूसरों पर रहम नहीं करता उस पर भी (ख़ुदा की तरफ़ से) रहम नहीं किया जाएगा । '' एक बार कुछ लोगों ने नबी (स) से दरख़ास्त की के आप अल्लाह से काफ़िरों के लिए अज़ाब की दुआ करें, लेकिन आप (स) ने फ़रमाया कि मैं लोगों के लिए अज़ाब बनाकार नहीं बल्कि रहमत बनाकार भेजा गया हूँ । ''

माफ़ी (क्षमा)

उन्हे माफ़ कर दो और छोड़ दो क्या तुम नही चाहते कि अल्लाह तुम्हें माफ़ करे? और (बेशक) अल्लाह बड़ा माफ़ करनेवाला और रहम करनेवाला है । (कुरआन, 24 : 22)

पैग़म्बर मुहम्मद (स) तमाम लोगों में ज्यादा दयालू और सबसे ज्यादा माफ़ कर देनेवाले थे । अगर कोई आपको गाली देता या बुरा-भला कहता, तो आप (स) उसे माफ़ कर देते । और व्यक्ति जितना ज्यदा सख्त होता , आप उसके साथ उतने ही धैर्य से काम लेते । आप हद से ज्यादा नर्म स्वभाव और क्षमाभाव रखनेवाले वयक्ति थे, विशेष रुप से उस समय उन्होंने लोगों को माफ़ कर दिया जब्कि उनको लोगों पर प्रभुत्व और ग़लबा हासिल हो गया और बदला लेने की ताक़त रखते थे ।

समानता

'' वास्तव में अल्लाह के नज़दीक तुममें सबसे ज्यादा प्रतिष्ठित (इज़्ज़तवाला) वह है जो तुम में सबसे ज्यादा नेक है । '' (कुरआन 49:13)

आप (स) ने फ़रमाया कि तमाम इनसान अल्लाह की नज़र में बराबर है । आप (स) ने फ़रमाया, 'तमाम इनसान आदम से पैदा किये गए और आदम को मिट्टी से पैदा किया गया था । इसलिए न किसी अरबी को किसी गैर-अरबी पर और न किसी गोरे को किसी काले पर कोई बड़ाई हासिल है सिवाय उसके कि जो ख़ुदा से ज्यदा डरनेवाला और नेक हो । ''

'' अल्लाह तुम्हारा फ़ैसला तुम्हारे बाहरी रूप वेश-भूषा और तुम्हारे धन के मुताबिक़ नहीं करता, बल्कि वह तुम्हारे दिलों और तुम्हारे कर्मों को देखता है । ''

कहा जाता है कि एक बार कि बात है कि प्यारे नबी (स) के एक साथी ने किसी दूसरे साथी को ग़लत तरीके से पुकारते हुए '' काली औरत के लड़के कहा । नबी (स) को गुस्सा आ गया और आपने फ़रमाया कि क्या तुम उसे केवल इसलिए बेइज़्ज़त करते हो कि उसकी माँ काली है ? तुम्हारे अन्दर अभी भी इस्लाम से पहले की जाहिलीयत के निशान बाक़ी है । ''

सहनशीलता

जो तुम्हारे साथ बुरा करें तो तुम उनके साथ बुरा मत करो, बल्कि तुम उनके साथ दरगुज़र और रहम का मामला करो । अपने ऊपर होनेवाले हमलें और गालियों का जवाब अल्लाह के आख़िरी नबी (स) की तरह दरगुज़र और रहम से दिया करो।

'' भलाई और बुराई समान नहीं है । तुम बुराई को उस नेकी से दूर करो जो सबसे बेहतर हो । तुम देखोगे कि तुम्हारे साथ जिसका बैर पड़ा हुआ था वह जिगरी दोस्त बन गया है । (कुरआन 41 : 34)

इस्लामी स्रोतों से ऐसी बहुत-सी घटनाओं का पता चलता है कि पैग़म्बर मुहम्मद (स) को उन लोगों से बदला लेने का मौक़ा मिला जिन्होंने अपके साथ ग़लत किया था लेकिन आप (स) ने किसी से कोई बदला नहीं लिया ।

आप (स) ने विपत्ति और तंगहाली में भी इनसान को सब्र करने का उपदेश दिया । कहा कि 'ताक़तवर वह नहीं है जो अपनी ताक़त से लोगों को हरा दे, बल्कि ताक़तवर तो वह है जो गुस्से की हालत में ख़ुद पर काबू रखे ।''

सब्र और धैर्य से काम लेने का मतलब यह नहीं है कि मुसलमान चुपचाप बैठ जाए और अपने ऊपर होनेवाले हमले का बचाव ही न करे । नबी(स) ने फ़रमाया कि दुश्मन से मुक़ाबले कि तमन्ना मत करो, लेकिन जब दुश्मन से मुक़ाबला हो जाए तो सब्र से काम लो (यानी मज़बूती के साथ जमे रहो और बहादुरी के साथ मुक़ाबला करो।

नर्मी और शराफ़त (Gentleness)

आप (स) के एक साथी , जो दस सालों तक आपकी सेवा में रहे कहते हैं कि नबी (स) ने हमेशा मेरे साथ नर्मि का बरताव किया । मैं जब भी कुछ करता तो आप (स) कभी मेरे काम करने के ढंग और तरीक़े पर एतिराज़ न करते और जब मैं कुछ कर न पाता तो आप (स) कभी मेरी नाकामी पर भी एतिराज़ न करते ।

'' ऐ पैग़म्बर यह अल्लाह की बड़ी दयालुता है कि तुम लोगों के लिए बहुत नर्म स्वभाव के हो । अन्यथा यदि कहीं तुम सख्त स्वभाव और कठोर दिल के होते तो ये सब तुम्हारे आस-पास से छँट जाते । (कुआन 3 : 159)